NEXT IAS

प्राचीन भारत का इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा 2027

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विज़िट करें: www.madeeasypublications.org

प्राचीन भारत का इतिहास

© **कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024
द्वितीय संस्करण: 2025
तृतीय संस्करण: 2026

विषयसूची

प्राचीन भारत का इतिहास

इकाई–I: सभ्यता के विभिन्न स्वरूप

अध्याय 1

भारतीय प्राक्–इतिहास (Indian Pre-History)..........................2

1.1 परिचय (Introduction)...2

1.2 पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व) [Paleolithic Age (500,000 BC to 10,000 BC)]..3

निम्न पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व – 50,000 ईसा पूर्व) [Lower Paleolithic (500,000 BC – 50,000 BC)]................................3

उत्तर भारत (सोहन संस्कृति).......................................3

मध्य भारत (Central India)......................................3

दक्षिण भारत (मद्रास संस्कृति)....................................3

मध्य पुरापाषाण काल (50,000 ईसा पूर्व – 40,000 ईसा पूर्व) [Middle Paleolithic (50,000 BC & 40,000 BC)]..4

उच्च पुरापाषाण काल (40,000 ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व) [Upper Paleolithic (40,000 BC & 10,000 BC)]..5

पुरापाषाण काल में कला (Art in the Paleolithic Age)...5

पुरापाषाण काल में समाज (Society in Paleolithic Age)..................................6

इस चरण का महत्त्व (Importance of this Phase)........6

इस चरण की सीमाएँ (Limitations of this Phase)........6

1.3 मध्य पाषाण काल (9,000 ईसा पूर्व – 4,000 ईसा पूर्व) [Mesolithic Age (9,000 BC – 4,000 BC)]...........6

जीवन-निर्वाह का तरीका (Way of Living)...................6

प्रमुख स्थल (Major Sites).......................................6

उपकरणों की प्रकृति (Nature of Tools)......................7

मध्य पाषाण काल में कला (Art in Mesolithic Age)...8

मध्य पाषाण काल में समाज (Society in Mesolithic Age)..................................8

मध्य पाषाण काल का महत्त्व (Importance of Mesolithic Age)............................8

मध्य पाषाण काल की सीमाएँ (Limitations of Mesolithic Age).............................8

1.4 नवपाषाण काल (9000 – 1000 ईसा पूर्व) [Neolithic Age (9000 – 1000 BC)].......................8

प्रमुख स्थल (Major Sites)..9

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (North-Western Zone).................9

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (North-Eastern Zone)........................9

दक्षिणी क्षेत्र (Southern Zone)..................................9

प्रमुख उपकरण (Major Tools)...................................9

नवपाषाण काल का महत्त्व (Importance of Neolithic Age)............................10

नवपाषाण काल की सीमाएँ (Limitations of the Neolithic Age)......................10

1.5 ताम्रपाषाण काल (2800 ईसा पूर्व – 700 ईसा पूर्व) [Chalcolithic Age (2800 BC – 700 BC)].................10

प्रमुख स्थल (Major Sites)......................................10

प्रमुख उपकरण (Major Tools).................................11

पशुओं का घरेलूकरण (Domestication of Animals)...11

कृषि एवं भोजन (Agriculture and Food)................11

ताम्रपाषाण काल में कला (Art in Chalcolithic Age)....11

ताम्रपाषाण काल में समाज (Society in Chalcolithic Age).............................11

ताम्रपाषाण काल का महत्त्व (Importance of Chalcolithic Age).......................11

ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों की सीमाएँ (Limitations of Chalcolithic Cultures)................11

कुछ महत्त्वपूर्ण खोजें (Some Important Discoveries)...........................12

अध्याय 2

सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization)....................14

2.1 परिचय (Introduction)...14

2.2 भौगोलिक विस्तार (Geographical Extent)................14

2.3 सिंधु घाटी सभ्यता के चरण (Phases of Indus Valley Civilization).......................15

2.4 खोज (Discovery)..16

2.5 विशेषताएँ (Features) 16

प्रशासन (Administration).......................................17

आर्थिक जीवन (Economic Life)..............................18

व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)...........19

बाट एवं माप (Weights and Measures)..................20

सामाजिक जीवन (Social Life)..................................20

धार्मिक परंपराएँ (Religious Practices).....................22

विज्ञान और प्रौद्योगिकी (Science and Technology)...23

2.6 हड़प्पा और समकालीन संस्कृतियाँ (Harappa and Contemporary Cultures) 24

2.7 महत्त्वपूर्ण स्थल (Important Sites) 25

हड़प्पा (Harappa)...25

मोहनजोदड़ो (Mohenjo-Daro)..................................25

वृहत् स्नानागार (Great Bath) 25

कालीबंगा (Kalibangan)...26

कोटदीजी (Kot-Diji)..26

लोथल (Lothal)...26

सुरकोटदा (Surkotda)...27

सुत्कागेंडोर (Sutkagen-Dor) 27

रोपड़ (Ropar)..27

आलमगीरपुर (Alamgirpur).....................................27

आमरी (Amri)...27

चन्हूदड़ो (Chanhu-daro).......................................28

बनावली (Banawali) 28

राखीगढ़ी (Rakhigarhi)...28

रंगपुर (Rangpur)..29

धौलावीरा (Dholavira) 29

2.8 सभ्यता के अंत से संबंधित सिद्धांत (End of Civilization Theories) 29

पतन के सिद्धांत (Theories of Decline)....................30

भीषण बाढ़ और भूकंप (Massive Floods and Earthquakes) 30

सिंधु नदी के मार्ग में परिवर्तन (Shifting in the Course of Indus River)................30

घग्गर-हकरा नदी की बढ़ती शुष्कता तथा सूखा (Increased Aridity and Drying Up of Ghaggar-Hakra River).......................................30

आर्य आक्रमण का सिद्धांत (Aryan Invasion Theory)..31

क्षेत्र की पारिस्थितिकी में अनियमितता (Disturbed Ecology of the Region).....................31

अध्याय 3

आर्य एवं आरंभिक ऋग्वैदिक चरण (Aryans and Early Rig Vedic Phase) 38

3.1 आर्य (Aryans) 38

3.2 सिद्धांत: आर्यों का वास-स्थान तथा प्रवास (Theories: Home and Migration of Aryans)..............38

आर्यों का मूल निवास (Original Home of Aryans) 38

विदेशी मूल का सिद्धांत (Theory of Foreign Origin) ..38

विदेशी मूल का समर्थन करने वाले तर्क (Arguments Supporting Foreign Origin).............39

ऋग्वेद – अवेस्ता संबंध (The Rig-Veda – Avesta Link)............................40

आर्यों की भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Indian Origin of Aryans) 40

आर्यों की भारतीय उत्पत्ति का समर्थन करने वाले तर्क (Theory of Indian Origin of Aryans).............40

3.3 आर्य: भारत में प्रवास, प्रसार एवं अंत: का प्रवेश मार्ग (Aryans: Route of Migration, Spread and Penetration in India) 41

प्रवास का मार्ग (Route of Migration).......................41

काबुल घाटी एवं पंजाब से प्रवेश (Entry from Kabul Valley and Punjab).................41

भारत के आंतरिक क्षेत्रों में प्रवेश (Penetration Deep Inside India) 42

बंगाल का आर्यीकरण (Aryanization of Bengal)........42

दक्षिण में आर्य (Aryans in South) 42

3.4 आर्य प्रशासन (Aryans Administration).......................42

राजनीतिक संगठन (Political Organization)...............42

राजा की सहायता करने वाले पदाधिकारी (Functionaries Assisting King)............................43

कबायली संगठन (Tribal Assembly).........................43

सभा (Sabha) 44

समिति (Samiti) 44

सभा और समिति: एक तुलना (Sabha and Samiti: A Comparison)....................44

कबायली संघर्ष (Tribal Conflicts)............................44

3.5 अर्थव्यवस्था: वैदिक काल (Economic: Vedic Period)...45
अर्थव्यवस्था का स्वरूप (Nature of Economy)...........45
प्रमुख व्यवसाय एवं भूमि का स्वामित्व (Major Occupations and Ownership of Land) 45
उद्योग (Industry) 46
व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)...........46
परिवहन एवं व्यापार का माध्यम (Transportation and Medium of Trade)...............46
विदेशी व्यापार (Overseas Trade) 46

3.6 आर्य समाज (Aryan Society) 47
पारिवारिक जीवन (Family Life) 47
सामाजिक जीवन (Social Life).................................47
समाज की प्रकृति (Nature of Society).....................47
महिलाओं की स्थिति (Position of Women) 48
सामाजिक विभाजन (Social Divisions).....................48
आर्यों का धार्मिक जीवन (Religious Life of Aryans)...49

3.7 यज्ञ या बलि अनुष्ठान (Yagnas or Sacrifices) 49
यज्ञ का उद्देश्य (Purpose of Yajna) 49
यज्ञों के प्रकार (Types of Yajnas)...........................50
यज्ञ करने का विशेषाधिकार (Prerogative to Perform a Yagna).......................50

3.8 इस चरण का महत्त्व (Importance of this Phase).........50

3.9 सीमाएँ (Limitations) 50

अध्याय 4

उत्तर वैदिक काल (Later Vedic Phase)............................56

4.1 परिचय (Introduction) 56

4.2 भौगोलिक विस्तार (Geographical Expanse) 56

4.3 व्यवस्थित विस्तार (Systematic Expansion).................57

4.4 विस्तार का कारण (Reason for Expansion) 57

4.5 राजनीतिक स्थिति (Political Condition).......................58

4.6 आर्थिक स्थिति (Economic Condition).......................59

4.7 सामाजिक स्थिति (Social Condition)..........................60
ब्राह्मणों की स्थिति (Position of Brahmans)..............60
क्षत्रियों की स्थिति (Position of Kshatriyas) 60
वैश्यों की स्थिति (Position of Vaishyas)..................60
शूद्रों की स्थिति (Position of Kshudras) 60
महिलाओं की स्थिति (Position of Women) 60

4.8 धार्मिक आचरण (Religious Practices).......................62

4.9 वैदिक साहित्य (Vedic Literature).............................62
वेद (Vedas)...63

4.10 वैदिक दर्शन (Vedic Philosophy) 64

4.11 महाकाव्य (Epics) 65
रामायण (Ramayana)..65
महाभारत (Mahabharta)..65

इकाई – II: साम्राज्यों का सुदृढ़ीकरण

अध्याय 5

जैन धर्म और बौद्ध धर्म (Jainism and Buddhism).............69

5.1 नए धर्मों का उदय (Rise of New Religion) 69

5.2 नए धर्मों के उदय के कारण (Reasons for the Rise of New Religions).................69
समाज का चतुर्मुखी स्तरीकरण (Four-Fold Stratification of Society) 69
नई कृषि अर्थव्यवस्था का उदय (Rise of New Agricultural Economy)...................69
उत्तर-पूर्वी भारत में शहरों और व्यापार/वाणिज्य का विकास (Growth of Cities and Trade/ Commerce in North-Eastern India).....................69
भौतिक जीवन से सरल जीवन तक (Material Life to Simple Life)...............................70
भाषा (Language)..70
जिज्ञासा, तर्क-वितर्क और चर्चा (Curiosity, Debates and Discussions) 70

5.3 जैन धर्म (Jainism)...70
तीर्थंकर (Tirthankaras) 70
जैन धर्म के दो संप्रदाय (Two Sects of Jainism)........72
जैन धर्म का प्रसार (Spread of Jainism)...................72
जैन धर्म के प्रमुख अनुयायी (Main Followers of Jainism)................................72
जैन परिषद् (Jain Councils) 72
जैन साहित्य (Jain Literature) 72
जैन धर्म का योगदान (Contributions of Jainism) 73
जैन वास्तुकला (Jain Architecture)..........................73
व्यापार में योगदान (Contribution in Trade)...............73
सीमित प्रसार के कारण (Causes of Limited Spread) 73
पतन के कारण (Causes of Decline).......................73

5.4 बौद्ध धर्म (Buddhism).....74
गौतम बुद्ध (Gautama Buddha).....74
सामाजिक आदेश और विधान (Social Orders and Legislation).....74
शिक्षाएँ (Teachings).....75
बौद्ध धर्म के सिद्धांत (Doctrines of Buddhism).....75
आष्टांगिक मार्ग (मानव दुख के निवारण के लिए).....75
बौद्ध धर्म का प्रसार (Spread of Buddhism).....76
बौद्ध धर्म की प्रमुख विशेषताएँ (Special Features of Buddhism).....77
बौद्ध धर्म के संप्रदाय (Sects of Buddhism).....78
बौद्ध संगीति (Buddhist Councils).....78
प्रशासन (Administration).....79
बौद्ध साहित्य (Buddhist Literature).....79
बौद्ध धर्म का योगदान (भाषा, साहित्य, कला और व्यापार आदि) [Contribution of Buddhism (Language] literature, Art and Trade etc-)].....79
पतन के कारण (Causes of Decline).....80
महत्त्व एवं प्रभाव (Importance and Influence).....80
5.5 बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच समानताएँ (Similarities between Buddhism and Jainism).....81
5.6 बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच अंतर (Differences between Buddhism and Jainism).....81

अध्याय 6

महाजनपद (Mahajanapadas).....86
6.1 महाजनपदों का उदय (Rise of Mahajanapadas).....86
6.2 उदय के कारण (Reasons for Rise).....86
6.3 उदय के साथ परिवर्तन (Changes with the Rise).....86
6.4 प्राचीन भारतीय गणराज्य (Ancient Indian Republics).....87
6.5 सोलह महाजनपद (Sixteen Mahajanapadas).....87
6.6 महाजनपदों की अवस्थिति (Location of Mahajanapadas).....88
6.7 मगध साम्राज्य (Magadha Empire).....88
मगध साम्राज्य का उदय (Rise of Magadha Empire).....88
मगध के उदय के कारण (Reasons for the Rise of Magadha).....90

अध्याय 7

ईरानी तथा मकदूनियाई आक्रमण (Iranian and Macedonian Invasions).....92
7.1 ईरानी आक्रमण (Iranian Invasions).....92
7.2 पश्चिमोत्तर क्षेत्र का महत्त्व (Importance of North&West).....92
7.3 ईरानी संपर्क के प्रभाव (Influence of the Contacts).....92
7.4 सिकंदर का आक्रमण (Alexander's Invasion).....93
सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव एवं महत्त्व (Effects and Importance of Alexander's Invasion).....93

अध्याय 8

मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire).....95
8.1 परिचय (Introduction):.....95
8.2 चंद्रगुप्त मौर्य (322-297 ई.पू.) Chandragupta Maurya (322.297 BC).....95
8.3 चंद्रगुप्त मौर्य की राज्य संबंधी व्यवस्था (Imperial Organization of Chandragupta Maurya).....96
8.4 चाणक्य (Chanakya).....96
अर्थशास्त्र (Arthashastra).....97
8.5 बिंदुसार (297-272 ई.पू.) [Bindusara (297 BC – 272 BC)].....97
8.6 अशोक (Asoka).....97
अशोक का उदय (Rise of Asoka).....97
कलिंग युद्ध (Kalinga War).....97
कलिंग युद्ध का प्रभाव (Impact of Kalinga War).....97
अशोक की धम्म नीति (Asoka's Dhamma).....98
अशोक के अभिलेख (Asoka's Inscriptions).....99
लघु शिलालेख (Minor Rock Edicts).....99
स्तंभलेखों के निर्माण हेतु प्रयुक्त सामग्री (Sources of Pillar Stones).....100
अभिलेखों की भाषा (Language of Inscriptions).....100
अशोक के साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार (Extent of Asoka's Empire).....100
8.7 आंतरिक नीति तथा बौद्ध धर्म (Internal Policy and Buddhism).....100
8.8 उत्तर मौर्य (Later Mauryas).....102

8.9 मौर्य प्रशासन (Mauryan Administration)................102
मंत्रिपरिषद् (Council of Ministers)........................102
सेना (Army)...103
प्रशासन..103
कर प्रशासन (Tax Administration)........................103
8.10 आर्थिक स्थिति (Economic Conditions).......................................104
8.11 सामाजिक स्थिति (Social Conditions) 104
8.12 शिल्पकला एवं वास्तुकला (Art and Architecture) 104
8.13 मौर्य साम्राज्य की जानकारी के स्रोत (Sources of Mauryan Empire)..........................105
पुरातात्त्विक स्रोत (Archaeological Sources)...........106
8.14 भौतिक संस्कृति (Material Culture).......................106
8.15 मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण (Reasons for Decline).....................................106
8.16 मौर्य साम्राज्य का महत्त्व (Importance of Mauryan Empire) 107
8.17 मौर्य साम्राज्य की सीमाएँ/कमियाँ (Limitation of Mauryan Empire) 107
8.18 बाद के साम्राज्य/राज्य (Later kingdoms)...107

इकाई – III: विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियाँ

अध्याय 9

मौर्योत्तर काल (Post Mauryan Times).............................111
9.1 परिचय (Introduction) 111
9.2 विदेशी राजवंश (भारत-मध्य एशिया संबंध) [Central Asian Contacts with India].................112
हिंद-यवन (Indo Greeks)....................................112
शक (सीथियन) (Sakas or Scythians).................112
क्षत्रप प्रणाली (60 ईसा पूर्व – दूसरी शताब्दी ईस्वी) [Satrap System (60 BC – 2nd Century AD)] 113
पहलव (पार्थियन) (Parthians)...............................113
कुषाण (50-230 ईस्वी) [Kushans (50 – 230 AD)] 113
9.3 मध्य एशिया से संपर्क के प्रभाव (Central Asian Contacts: Impact)....................114
9.4 राजनीतिक-प्रशासनिक स्थिति (Political-administrative Situation) 114
9.5 धार्मिक स्थिति (Religion).....................................114
9.6 विभाजन (Disintegration).......................................114
9.7 भारतीय राजवंश (Indian Dynasties) 114
शुंग वंश (185 ईसा पूर्व ख 75 ईसा पूर्व) [Shunga Dynasty] 114
कण्व वंश (75 ईसा पूर्व ख 30 ईसा पूर्व) [Kanva Dynasty]..116
महामेघवाहन या चेदि वंश (Mahameghavahana or Chedi Dynasty of Kalinga)..116
सातवाहन वंश (पहली शताब्दी ईसा पूर्व – आरंभिक तीसरी शताब्दी ईस्वी) [Satvahanas (1st Century BCE – Early 3rd Century AD)].............118
9.8 विदेशी व्यापार (Foreign Trade)............................119
9.9 मौर्योत्तर काल का महत्त्व (Importance of this Phase) 120
9.10 मौर्योत्तर काल की सीमाएँ (Limitations of this Phase) 120

अध्याय 10

गुप्तकाल (Gupta Period)...124
10.1 परिचय (Introduction) 124
10.2 गुप्त वंश का उदय (Rise of Gupta Dynasty)..........124
10.3 प्रमुख गुप्त शासक व उनका शासनकाल (Prominent Gupta Rulers and their Reign)........124
चंद्रगुप्त-I : 319-335 ईस्वी (Chandragupta-I : 319-335 AD) 125
समुद्रगुप्त : 335-380 ईस्वी (Samudragupta : 335-380 AD)........................125
चंद्रगुप्त-II 'विक्रमादित्य': 380-415 ईस्वी (Chandragupta-II 'Vikramaditya' : 380-415 AD)...126
कुमारगुप्त-I 'महेंद्रादित्य': 415-455 ईस्वी (Kumargupta-I 'Mahendraditya': 415-455 AD) 127
स्कंदगुप्त 'क्रमादित्य': 455-467 ईस्वी (Skandgupta 'Kramaditya' : 455-467 AD)........127
उत्तरवर्ती गुप्त शासक (Later Guptas) 127
10.4 गुप्तकालीन राजव्यवस्था (Gupta's Polity) 127
शक्ति का विकेंद्रीकरण एवं हस्तांतरण (Decentralization and Devolution of Power) 127
साम्राज्यिक/शाही सरकार (Imperial Government) 129

10.5 गुप्त प्रशासन (Gupta Administration)....................129
केंद्रीय प्रशासन (Central Administration) 129
सैन्य प्रशासन Administration at (Military Level) 131
न्यायिक प्रशासन (Judicial System)........................131
राजस्व प्रशासन (Revenue Administration) 131
भूमि अनुदान व्यवस्था (Land Grant System)...........132
10.6 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था (Gupta's Economy) 132
परिचय (Introduction) 132
कृषि (Agriculture)...132
श्रेणी व्यवस्था (Guild System) 132
आर्थिक विनियमन (Economic Regulation) 133
मुद्रा (Currency)...133
सिक्कों की कमी (Paucity of Coins)......................134
व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce).........137
व्यापार की प्रकृति (Nature of Trade)......................137
व्यापार का पतन (Decline of Trade) 138
10.7 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (Science and Technology) 138
खगोल विज्ञान (Astronomy)..................................138
गणित (Mathematics) 138
धातुकर्म (Mettalurgy) 138
10.8 गुप्तकालीन समाज (Gupta's Society) 139
धर्म (Religion)...139
सामाजिक व्यवस्था (Social System).......................139
भू-स्वामी वर्ग का उदय (Rise of Landed Class).....140
10.9 गुप्तकालीन कला एवं वास्तुकला (Gupta Art and Architecture)...........................140
10.10 गुप्तकालीन साहित्य (Gupta Literature)..141
10.11 गुप्तकालीन अभिलेख (Gupta Inscription) 142
10.12 हूण आक्रमण (The Hunas Invasion) 142
10.13 गुप्त साम्राज्य का विघटन (Decline of the Gupta Empire)..........................143
10.14 गुप्त साम्राज्य का महत्त्व (Significance of the Gupta Empire) 144

अध्याय 11

गुप्तोत्तर काल (Post Guptas Period) 148
11.1 परिचय (Introduction) 148
11.2 मौखरि वंश (Maukhari Dyanasty) 148
11.3 नाग वंश (Naga Dynasty)...................................148
11.4 माघ वंश (Magha Dynasty)................................148
11.5 वाकाटक वंश (Vakataka Dynasty) 148
प्रवरपुर-नंदीवर्धन शाखा (Pravarpura – Nandivardhana Branch).............149
वत्सगुल्म शाखा (Vatsagulma Branch).................149
वाकाटकों का पतन (Decline of Vakatakas) 150
वाकाटक वंश की विरासत (Legacy of Vakataka Dynasty) 150
11.6 पुष्यभूति वंश (Pushyabhuti Dynasty) 150
11.7 हर्षवर्धन (Harshavardhana)................................151
परिचय (Introduction) 151
राजव्यवस्था (Polity)..151
प्रशासन (Administration)....................................151
धर्म (Religion)...152
हर्षकालीन साहित्य (Literature of Harsha Period)...153
हर्ष के शासन के दौरान बौद्ध धर्म (Buddhism during Harsha's Rule)....................153
11.8 हर्ष के दौरान नालंदा (Nalanda during Harsha).................................154
11.9 हर्षकालीन अर्थव्यवस्था (Harsha's Economy)..154
11.10 हर्षकालीन समाज (Harsha's Society)...154
11.11 हर्ष के शासनकाल संबंधी ह्वेनसांग का विवरण (Hiuen Tsang Account of Harsha's Rule) 155
राजव्यवस्था (Polity)..155
प्रशासन (Administration)....................................155
धर्म (Religion)...155
अर्थव्यवस्था (Economy) 155
समाज (Society)..156
शिक्षा व्यवस्था (Education System)......................156
11.12 आभीर वंश (Abhiras Dynasty)............................156
11.13 महिशक के शक (Sakas of Mahisaka)..156

11.14 त्रैकूटक वंश (Traikutakas Dynasty)......156

11.15 राष्ट्रकूट वंश (Rashtrakutas Dynasty)......157

राष्ट्रकूटों का प्रशासन (Administration of Rashtrakutas)......158

अर्थव्यवस्था (Economy)......158

साहित्य (Literature)......159

राष्ट्रकूटों की विरासत तथा योगदान (Contribution and Legacy of Rashtrakutas)......159

11.16 कलचुरि वंश (Kalachuris Dynasty)......160

उत्तरी शाखा (Northern Branch)......160

दक्षिणी शाखा (Southern Branch)......160

बसवन्ना तथा वचन (Basavana and Vachanas)......161

11.17 गंग वंश (Gangas Dynasty)......161

पश्चिमी गंग वंश (Western Ganga Dynasty)......161

पूर्वी गंग वंश (Eastern Ganga Dynasty)......162

11.18 बंगाल का पाल वंश (Pala Dynasty of Bengal)......162

पाल शासकों की विरासत (Legacy of Palas)......163

पालों का प्रशासन (Administration of Palas)......163

पालों की राजव्यवस्था (Polity of Palas)......164

11.19 सेन वंश (Sena Dynasty)......164

सेन वंश की विरासत (Legacy of Sena Dynasty)......164

11.20 गुप्तोत्तर काल की सीमाएँ/कमियाँ (Limitations of Later Gupta Period)......164

11.21 गुप्तोत्तर काल का महत्त्व (Significance of Later Gupta Period)......165

अध्याय 12

दक्षिण भारत (South India)......168

12.1 प्रारंभिक समय/काल से महापाषाणयुगीन संस्कृति तक (Early Times to Megalithic Culture)......168

महापाषण काल से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य (Important facts related to Megalithic period)......168

12.2 संगम युग (Sangam Era)......169

परिचय (Introduction)......169

तीन राजवंश (Three Dynasties)......169

प्रारंभिक पांड्य (Early Pandyas)......171

संगम राजव्यवस्था (Sangam Polity)......171

संगम प्रशासन (Sangam Administration)......171

संगम राजस्व प्रणाली (Sangam Revenue Systems) 172

संगम अर्थव्यवस्था (Sangam Economy)......172

संगमकालीन समाज (Sangam Society)......173

महिलाओं की स्थिति (Position of Women)......173

संगमयुगीन धार्मिक मान्यताएँ (Sangam Religious Beliefs)......174

ब्राह्मणवाद का आरंभ (Beginning of Brahmanism)......174

संगम साहित्य (Sangam Literature)......174

संगम कला और स्थापत्य कला (Sangam Art and Architecture)......175

संगम युग की समाप्ति (End of Sangam Age)......176

संगम काल का महत्त्व (Importance of the Period)......176

12.3 बादामी के चालुक्य (543 ईस्वी – 755 ईस्वी) [Chalukyas of Badami (543 AD – 755 AD)]......176

परिचय (Introduction)......176

महत्त्वपूर्ण शासक (Important Rulers)......176

राजव्यवस्था (Polity)......177

प्रशासन (Administration)......178

धर्म (Religion)......178

राजस्व (Revenue)......179

अर्थव्यवस्था (Economy)......179

समाज (Society)......179

साहित्य (Literature)......179

कला और स्थापत्य कला (Art and Architecture)......180

राजवंश का महत्त्व (Importance of the Dynasty)......181

12.4 कल्याणी के चालुक्य (973 ईस्वी – 1200 ईस्वी) [Chalukyas of Kalyani (973 AD – 1200 AD)]......181

परिचय (Introduction)......181

महत्त्वपूर्ण शासक (Important Rulers)......181

राजव्यवस्था (Polity)......182

प्रशासन (Administration)......183

धर्म (Religion)......183

अर्थव्यवस्था (Economy)......183

समाज (Society)......184

साहित्य (Literature)......184

कला और स्थापत्य कला (Art and Architecture)......184

राजवंश का महत्त्व (Importance of the Dynasty)......185

12.5 कांची के पल्लव (Pallavas of Kanchi) 185
परिचय (Introduction) 185
पल्लवः एक पृष्ठभूमि (Pallavas: A Background) ... 185
कुछ महत्त्वपूर्ण शासक (Some Important Rulers) 186
राजव्यवस्था (Polity) 187
प्रशासन (Administration) 187
अर्थव्यवस्था (Economy) 188
समाज (Society) 188
धर्म (Religion) 189
साहित्य (Literature) 189
कला और स्थापत्य कला (Art and Architecture) 190
पल्लव शासन का महत्त्व
(Importance of the Pallava Rule) 191

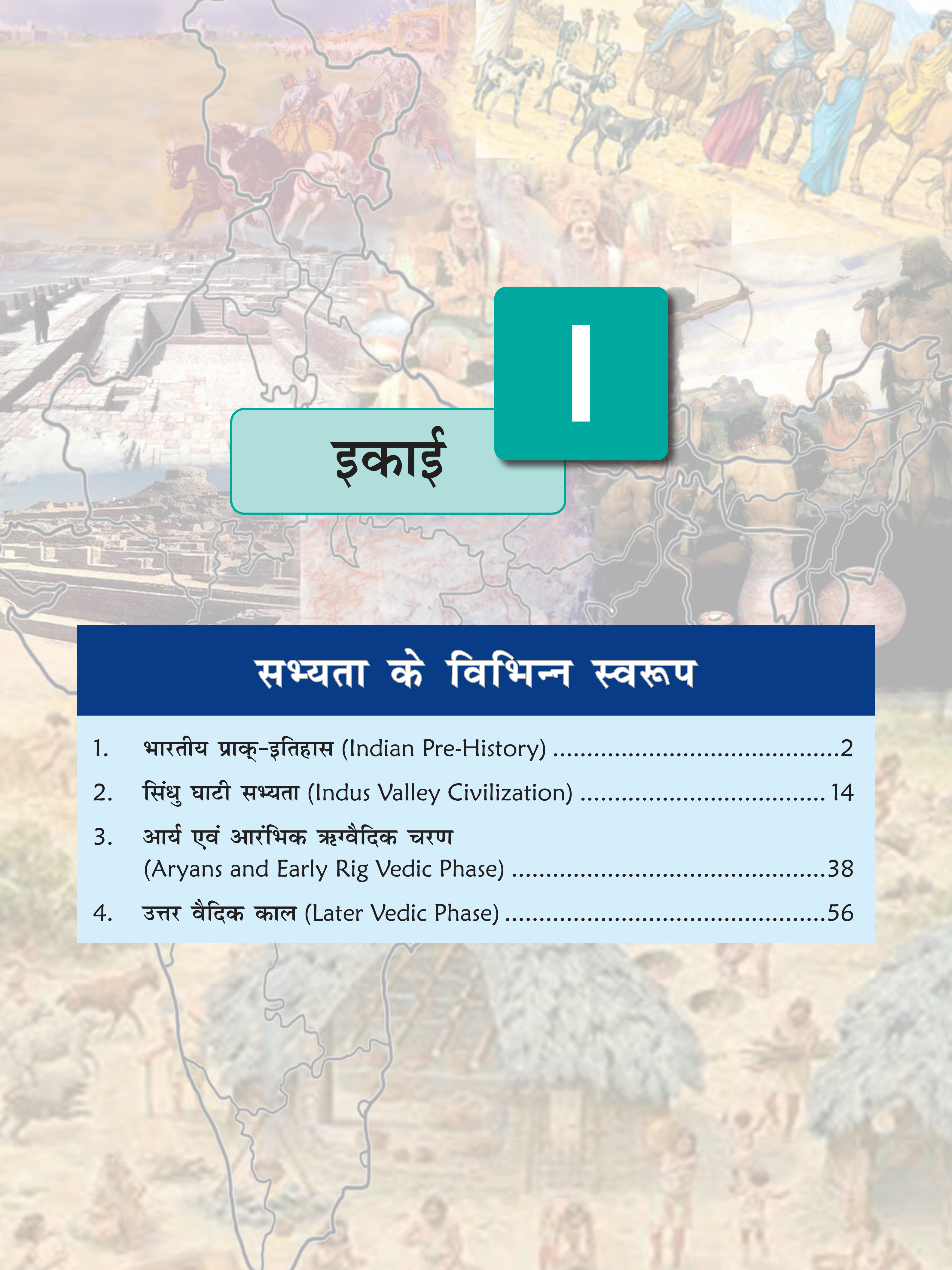

इकाई I

सभ्यता के विभिन्न स्वरूप

1. भारतीय प्राक्-इतिहास (Indian Pre-History) 2

2. सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) 14

3. आर्य एवं आरंभिक ऋग्वैदिक चरण (Aryans and Early Rig Vedic Phase) 38

4. उत्तर वैदिक काल (Later Vedic Phase) 56

अध्याय
1

भारतीय प्राक्-इतिहास
(Indian Pre-History)

1.1 परिचय (Introduction)

'प्राक्-इतिहास' से आशय, 'इतिहास से पहले' से है। इस काल का उपयोग उस समय और घटनाओं, दोनों को दर्शाने के लिए किया जाता है, जिसके पहले मनुष्य के पास लेखन की कोई लिपि नहीं थी। रॉबर्ट ब्रूस फूटे, जो एक ब्रिटिश भू-विज्ञानी और पुरातत्ववेत्ता थे, को भारतीय प्रागैतिहासिक काल का जनक माना जाता है। वह भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण से जुड़े थे तथा उन्होंने पाषाण काल के पुरावशेषों का दस्तावेज़ीकरण किया था। तीन मुख्य युगों, अर्थात् पाषाण काल, कांस्य काल और लौह काल की वर्तमान पुरातात्विक प्रणाली (Archaeological System) 1820 में डेनिश पुरातत्वविद् क्रिश्चियन जर्गेनसन थॉम्पसन (Christian Jurgenson Thompson) द्वारा विकसित की गई थी।

विभिन्न प्रकार के उपकरणों तथा तकनीकों के आधार पर प्रागैतिहासिक काल में मानव विकास के चरणों को पुरापाषाण या प्राचीन पाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व), मध्य पाषाण काल (9,000 ईसा पूर्व से 4,000 ईसा पूर्व), नव पाषाण काल (9000 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व) तथा ताम्र पाषाण काल (2800 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व) के रूप में वर्णित किया गया है। इन युगों के दौरान, मानव लिखना नहीं जानता था तथा बहुत ही आदिम जीवन-शैली में रहता था। इसके अलावा, 10,000 ईसा पूर्व के बाद के मानव जीवाश्म शायद ही उपलब्ध हों, इसलिए हमें उनके द्वारा उपयोग की गई कलाकृतियों (Artefacts) से उनकी जीवन-शैली और संस्कृति का अनुमान लगाना होगा। ये कलाकृतियाँ विभिन्न उत्खननों (Escavations) में पाई जाती हैं तथा फिर विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा उनका अध्ययन किया जाता है। इन कलाकृतियों में सामान्यत: उपकरण, हथियार, मिट्टी के बर्तन, कला, शिल्प और अन्य अवशेष शामिल होते हैं, जो बड़े पैमाने पर पत्थरों से बने होते हैं और यही कारण है कि प्रागैतिहासिक संस्कृतियों (Prehistoric Cultures) को पाषाणिक संस्कृतियों (Lithic Cultures) के रूप में जाना जाता है।

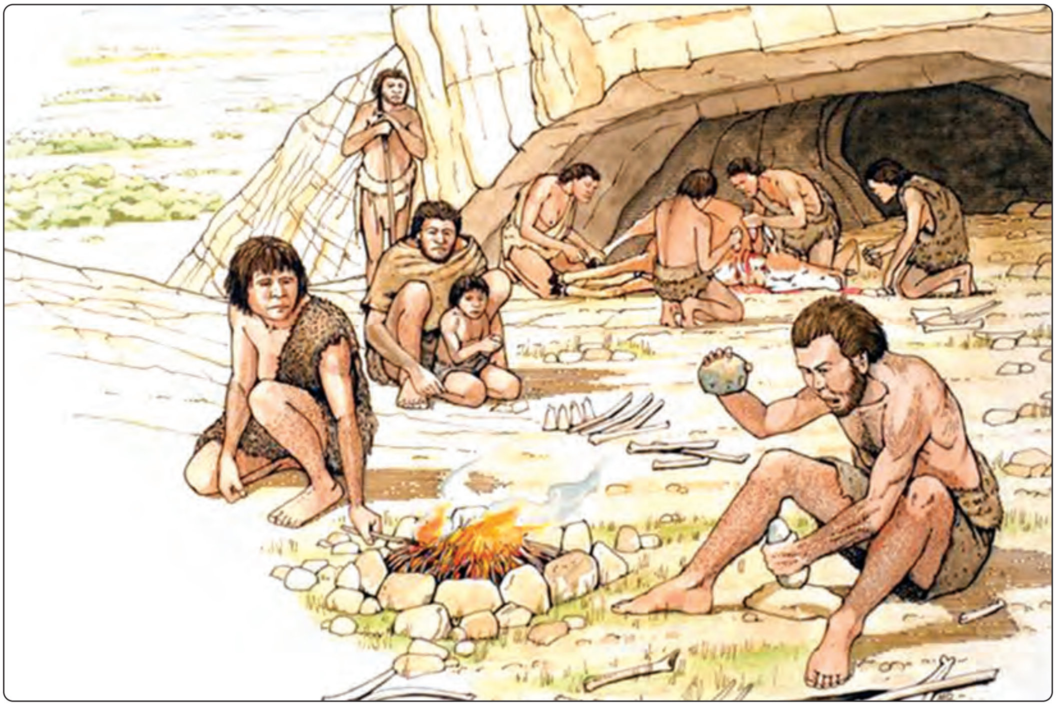

प्रारंभिक पाषाणकालीन जीवन का निरूपण

1.2 पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व) [Paleolithic Age (500,000 BC to 10,000 BC)]

पुरापाषाण शब्द ग्रीक शब्द पैलियो और लिथिक से मिलकर बना है, जिसमें 'पैलियो' का अर्थ पुराना और 'लिथिक' का अर्थ पत्थर है। इसलिए, पुरापाषाण काल शब्द पुराने पाषाण काल को संदर्भित करता है। यह एक लंबी अवधि में विस्तृत है और इसमें कई जलवायु परिवर्तन हुए हैं।

पुरापाषाण काल के प्रकार: लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रस्तर/पत्थर के औज़ारों के प्रकार के अनुसार, इस काल को निम्नलिखित तीन उप-कालों में वर्गीकृत किया गया है:

पुरापाषाण काल के प्रकार	
प्रकार	**समयावधि**
प्रारंभिक/निम्न	500,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व
मध्य	50,000 ईसा पूर्व - 40,000 ईसा पूर्व
उच्च	40,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व

निम्न पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व) [Lower Paleolithic (500,000 BC – 50,000 BC)]

यह मानव अस्तित्व का प्रारंभिक काल है तथा प्रथम हिमकाल (गुंज ग्लेशिएशन) के अंत से लेकर तीसरे हिमकाल (रिस ग्लेशिएशन) के अंत तक अस्तित्व में था। इस चरण के दौरान जलवायु चरम थी और मनुष्य को जंगली जानवरों के साथ-साथ प्रकृति से भी संघर्ष करना पड़ा। भारतीय निम्न पुरापाषाण संस्कृति को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है, यदि हम उन स्थलों का सर्वेक्षण करें, जहाँ से उपकरण पाये गए हैं और फिर इन उपकरणों के संभावित उपयोग व उन्हें विकसित करने में नियोजित तकनीकों पर नज़र डालें। अब हम स्थलों को बेहतर ढंग से समझने के लिए उन्हें भौगोलिक रूप से विभाजित करेंगे।

उत्तर भारत (सोहन संस्कृति)

- इस चरण के स्थल, पंजाब में सोन या सोहन नदी की घाटी में पाए जाते हैं, जो वर्तमान पाकिस्तान में है। कश्मीर में कई स्थल पाए जाते हैं और इस चरण के उपकरण उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर जिले की बेलन घाटी में भी पाय गए हैं।
- उत्तर भारत में इस काल के मुख्य उपकरण- खंडक (Chopper), हाथ की कुल्हाड़ी (Hand Axes) और विदारक (Cleavers) थे। ये काटने के उपकरण कंकड़-पत्थरों से तैयार किये जाते थे।
- उपकरण खुरदरे और भारी होते थे, जो पत्थर के किनारों को काटकर बनाए जाते थे। इन उपकरणों का उद्देश्य पेड़ों की छाल और जानवरों की खालें प्राप्त करना था।

मध्य भारत (Central India)

इस क्षेत्र में मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान शामिल हैं। नर्मदा नदी का तट वह महत्त्वपूर्ण पथ है, जिसके किनारे पर स्थल पाये गए हैं। महत्त्वपूर्ण स्थल इस प्रकार हैं:

- **भीमबेटका:** यह मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में नर्मदा नदी से लगभग 40 किलोमीटर उत्तर में लगभग 700 गुफ़ाओं और चट्टानी आश्रयों का एक समूह है।
- **आदमगढ़:** यह होशंगाबाद में नर्मदा नदी से कुछ किलोमीटर दक्षिण में एक चट्टानी आश्रय स्थल है।
- **नगरी और चित्तौड़गढ़:** ये दोनों कलाकृतियों से समृद्ध हैं और राजस्थान में स्थित हैं।
- **डीडवाना:** यह राजस्थान का एक और महत्त्वपूर्ण स्थल है, जो शुष्क क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार के खंडक और अन्य काटने वाले उपकरणों के साथ खंडक उपकरणों का मिश्रण प्रदर्शित करता है।

दक्षिण भारत (मद्रास संस्कृति)

इस क्षेत्र में तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र शामिल हैं। इनमें से केरल में अब तक कोई भी निम्न पुरापाषाणकालीन कलाकृति नहीं मिली है।

- **तमिलनाडु:** मद्रास के पास कोर्तालयार नदी पर अत्तिरमपक्कम और वदामदुरै।
- **कर्नाटक:** किब्बानहल्ली, मालप्रभा और घाटप्रभा बेसिन, अनागवाड़ी और शोरापुर दोआब।
- **आंध्र प्रदेश:** कुरनूल जिले में गुंडलकम्मा नदी का तट, कृष्णा नदी पर नागार्जुनकोंडा।
- **महाराष्ट्र:** नासिक, नवेसा और पुणे।

दक्षिण भारतीय स्थलों में प्रमुख रूप से उपकरण के रूप में हाथ की कुल्हाड़ियाँ और विदारक (Hand axes and cleavers) पाए जाते हैं। उनके उचित उपयोग का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन कुछ अनुमान लगाए जा सकते हैं।

उत्तर के काटने के औज़ारों से पता चलता है कि सोहन लोग साधारण भोजन संग्रहकर्ता थे। दक्षिणी भारत की हाथ की कुल्हाड़ियाँ बहुउद्देशीय उपकरण थीं, जिनका उपयोग शिकार और जड़ें खोदने के लिए किया जा सकता था।

काटने के उपकरण

इन उपकरणों के लिए कच्चा माल मुख्य रूप से क्वार्टजाइट (Quartzite) था और कुछ स्थानों पर जैस्पर (Jasper) का भी उपयोग किया जाता था। यह कहा जा सकता है कि निम्न पुरापाषाण काल के लोग खानाबदोश शिकारी (Nomadic Hunters) और भोजन इकट्ठा करने वाले थे, जो स्वयं को बहुत छोटे समूहों में संगठित करते थे।

मध्य पुरापाषाण काल (50,000 ईसा पूर्व - 40,000 ईसा पूर्व) [Middle Paleolithic (50,000 BC - 40,000 BC)]

इस चरण के अध्ययन के लिए अधिक स्थल उपलब्ध नहीं हैं और प्रमुख स्थल भारत के कुछ क्षेत्रीय हिस्सों तक ही सीमित हैं। इस चरण के स्थलों का प्रमुख क्षेत्र पश्चिमी और दक्षिणी भारत में है, जबकि उत्तर भारत में कुछ छोटे स्थल हैं।

मध्य पुरापाषाण काल की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता निम्न पुरापाषाण काल की तुलना में लगभग 90% मामलों में कच्चे माल का क्वार्टजाइट से कैल्सेडनी, चर्ट और जैस्पर (Quartzite to Chalcedony, Chert and Jasper) में पूर्ण परिवर्तन है। इस चरण के कई स्थल निम्न पुरापाषाण चरण के स्थलों से मिलते हैं तथा मध्य पुरापाषाण काल का पहला स्थल महाराष्ट्र में नवेसा नामक स्थान पर पाया गया था। अन्य स्थल इस प्रकार हैं:

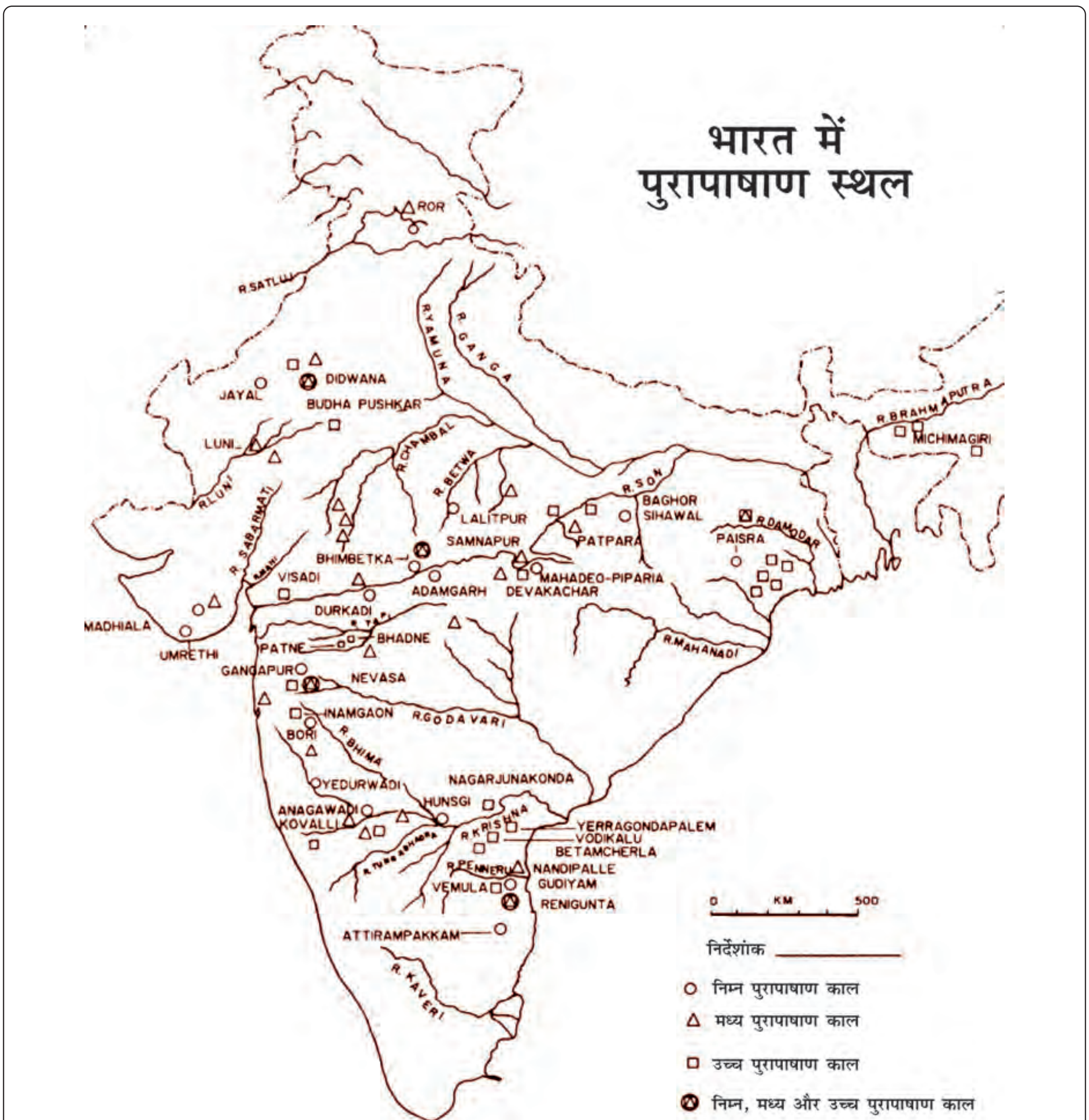

भारत में पुरापाषाणकालीन स्थल

- कर्नाटक: तमिनहाल, बागलकोट और अनागवाड़ी।
- आंध्र प्रदेश: चित्तूर, कुरनूल और नालगोंडा।
- मध्य प्रदेश: भीमबेटका गुफाएँ, गोंची, दमोह और सिहोरा।
- अन्य छोटे स्थल राजस्थान की लूनी घाटी, पंजाब की कांगड़ा घाटी, उत्तर प्रदेश की बेलन घाटी में पाए जाते हैं।

इस चरण के उपकरणों को शल्कयुक्त उपकरण (Flake Tools) कहा जाता है, क्योंकि ये बहुत छोटे होते हैं और शल्क से बने होते हैं। इनमें शामिल उपकरण फलक (Blades), नुकीले औज़ार (Point), बेधक (Borers) और खुरचनी (Scrappers) थे। कुछ संख्या में दो हाथ की कुल्हाड़ियाँ और काटने के अन्य उपकरण भी मिले थे।

पत्थर के औज़ार बनाना

उच्च पुरापाषाण काल (40,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व) [Upper Paleolithic (40,000 BC - 10,000 BC)]

भारत में उच्च पुरापाषाण चरण की उपस्थिति तब तक संदेह में रही, जब तक इस चरण के उपकरण आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के कई स्थलों में नहीं खोजे गए। भारत में उच्च पुरापाषाण काल के कुल 566 स्थल हैं। प्रागैतिहासिक काल के इस समय में जलवायु कम आर्द्र थी, क्योंकि यह हिमकाल के अंतिम चरण के समान थी। इस चरण के महत्त्वपूर्ण स्थल इस प्रकार हैं:

- **मुच्छटला चिंतामनु गावी (MCG)** आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में गुफ़ा स्थल है। यहाँ से प्राप्त औज़ारों में 90% हिस्सा हड्डियों का होता था, जबकि शेष 10% हिस्सा प्रस्तरों का बना हुआ था।
- **रेनीगुंटा** आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में रल्लाकालवा नदी के तट पर एक स्थल है। यहाँ से प्राप्त उपकरणों में फलक तथा खोदनी उपकरणों (Burins Tools) का सबसे बड़ा समूह है, जो बारीक दाने वाले हल्के हरे रंग के क्वार्टजाइट से बने हैं।
- **भीमबेटका गुफाएँ** मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में लगभग 700 गुफाओं और शिला आश्रयों वाला एक गुफा स्थल है।
- बेलन घाटी उत्तर प्रदेश में स्थित है।
- बघोर II उत्तर प्रदेश में सोन नदी के किनारे पर एक स्थल है।

उच्च पुरापाषाण चरण में फलक, खुरचनी और खोदनी जैसे नए उपकरणों का उपयोग किया गया था।

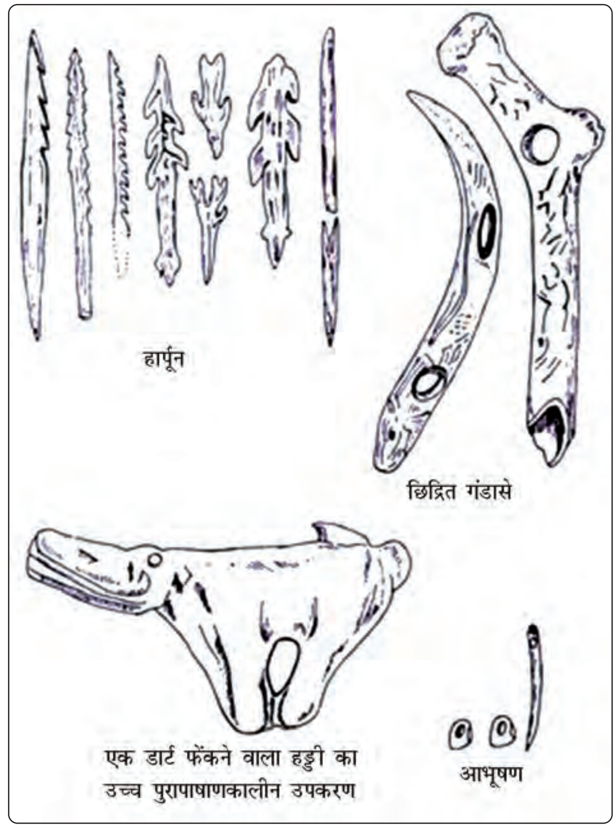

पुरापाषाण काल में कला (Art in the Paleolithic Age)

शैल चित्रकारी

इन लोगों की कलाकृतियों के पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्रों के रूप में उच्च पुरापाषाण काल का है। भीमबेटका की गुफाओं में इस चरण के कुछ शैल चित्र (Rock Paintings) हैं, जिनमें चित्रों के विषय विभिन्न पक्षी, जानवर और मनुष्य हैं। चित्रकला का उद्देश्य अभी भी स्पष्ट नहीं है, क्योंकि खानाबदोश जीवन के कारण उनके पास चित्रकला के लिए ज़्यादा समय नहीं बचता था। हालाँकि, एक राय यह बनाई जा सकती है कि लोगों ने उन पर नियंत्रण सुनिश्चित

करने के लिए विभिन्न जंगली पशुओं का चित्रण किया, क्योंकि उन्हें अपने अस्तित्व के लिए आखेट करने की आवश्यकता थी।

पुरापाषाण काल में समाज (Society in Paleolithic Age)

आखेट का निरूपण

उस समय जलवायु बहुत कठोर थी तथा भोजन की उपलब्धता दुर्लभ थी। भोजन को खोजने या बहुत मेहनत से इकट्ठा करने की आवश्यकता होती थी, इसलिए उस समय का समाज छोटा होता था। विशेष रूप से वे लगभग 25 लोगों के छोटे समूह थे, जो भोजन के लिए चारों ओर घूमते थे। उनका मुख्य व्यवसाय शिकार करना तथा भोजन एकत्रित करना था। एकत्रित भोजन समूह के सभी सदस्यों के बीच समान रूप से वितरित किया जाता था। उन्होंने खानाबदोश जीवन व्यतीत किया, क्योंकि वे उन स्थानों पर प्रवास करते रहे, जहाँ पानी के साथ-साथ पौधे और पशु संसाधन आसानी से उपलब्ध थे।

इस चरण का महत्त्व (Importance of this Phase)

इस चरण के दौरान एक बड़ा जलवायु परिवर्तन (Climatic Change) हुआ तथा इन लोगों ने इस परिवर्तन के प्रति स्वयं को बहुत अच्छी तरह से समायोजित किया और प्राकृतिक संकटों के बीच भी जीवित रहे। तब से अब तक जलवायु में अधिक बदलाव नहीं हुए हैं, जिससे बाद के लोगों के लिए प्रगति करना आसान हुआ। उपकरण प्रारूप और प्रयुक्त कच्चे माल (Raw Materials) में प्रगति अच्छी थी। भाषा के उपयोग के कारण संचार के तरीके में सुधार हुआ तथा इससे छोटे समाज के सुचारु रूप से कार्य करने में सुविधा हुई। इस चरण में आग की भी खोज की गई, जो उन्हें जंगली जानवरों से बचाती थी और शीत जलवायु में उन्हें अपना जीवन समायोजित करने में सहायता करती थी।

इस चरण की सीमाएँ (Limitations of this Phase)

अधिकांश उपकरण पत्थरों से बनाए जाते थे, इसलिए कच्चे माल के लिए उन्हें चट्टानों और पहाड़ों के पास रहना पड़ता था। उनके पास भोजन और अन्य संसाधनों की सीमित उपलब्धता थी, क्योंकि उन्हें पहाड़ों के पास रहने की आवश्यकता थी। वे खानाबदोश जीवन जीते थे, जिसके परिणामस्वरूप एक बेहतर संगठित समाज नहीं बन सका, इसलिए श्रम का विभाजन व्यावहारिक रूप से अनुपस्थित था। वे गुफाओं तथा शैल आश्रयों (Rock Shelters) में रहते थे, जो जीवन के ख़तरों से भरे हुए थे। इन सबके कारण बाद के लोगों की तुलना में उनका जीवनकाल थोड़ा छोटा हो गया।

1.3 मध्य पाषाण काल (9,000 ईसा पूर्व – 4,000 ईसा पूर्व) [Mesolithic Age (9,000 BC – 4,000 BC)]

जीवन-निर्वाह का तरीका (Way of Living)

लगभग 10,000 ईसा पूर्व, पाषाण काल की संस्कृति में एक संक्रमणकालिक चरण (Transitory Phase) शुरू हुआ, इस चरण को मध्य पाषाण काल के रूप में जाना जाता है। लगभग इसी समय, अंतिम हिमकाल (Last ice age) समाप्त हो गया तथा जलवायु गर्म एवं शुष्क हो गई थी। इसके परिणामस्वरूप नई वनस्पतियों और जीवों (Flora and fauna) का विकास हुआ। जंगलों और झाड़ियों में अगम्य झाड़-झंखाड़ (Impassable Undergrowth) में तीव्र वृद्धि हुई तथा बड़े जानवरों के स्थान पर छोटे और तेज़ दौड़ने वाले जानवरों में वृद्धि हुई। इस सबके कारण मध्य पाषाण काल के लोगों के लिए नई चुनौतियाँ पैदा हुईं, क्योंकि उन्हें भोजन इकट्ठा करने और नए तेज दौड़ने वाले ज़ानवरों का शिकार करने के लिए इन घने जंगलों से होकर गुजरना पड़ता था। इससे उन्हें इन चुनौतियों से पार पाने के लिए नए उपकरणों (सूक्ष्म पाषाण उपकरण) और तकनीकों का आविष्कार करना पड़ा। उनके रहने और शिकार करने के नए तरीकों को विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाने वाले स्थलों से समझा जा सकता है। इनमें से कुछ स्थलों का उल्लेख नीचे दिया गया है।

प्रमुख स्थल (Major Sites)

- बागोर राजस्थान के भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के तट पर स्थित एक स्थल है। यहाँ पाये गए सूक्ष्म पाषाण उपकरण (Microliths) भारत में सबसे छोटे हैं, जिनमें से अधिकांश 1.5-2 सेमी. की लंबाई में हैं।
- तिलवाड़ा राजस्थान में एक स्थल है। इस स्थल ने भारत में मध्य पाषाण काल की सबसे पश्चिमी सीमा का निर्माण किया था।
- लंघनाज गुजरात के मेहसाणा जिले में साबरमती नदी के पश्चिमी तट पर स्थित एक स्थल है।
- सराय नाहर राय उत्तर प्रदेश में स्थित एक स्थल है।
- बीरभानपुर पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले में दामोदर नदी पर एक स्थल है।

- भीमबेटका गुफाएँ मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में लगभग 700 गुफाओं और शैल आश्रयों वाला एक गुफा स्थल है।
- तिनेवेली या टेरी तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में ताम्रपर्णी नदी के किनारे एक स्थल है।
- संगनकल्लू कर्नाटक के बेल्लारी जिले में स्थित है।

उपकरणों की प्रकृति (Nature of Tools)

मध्य पाषाण काल की चारित्रिक विशेषता उन उपकरणों की प्रकृति है, जो आकार में छोटे होते थे, जिनकी लंबाई 1 से 8 सेमी. और चौड़ाई 0.5 – 1.5 सेमी. तक होती थी। ये उपकरण ज़्यादातर लकड़ी, हड्डी या बड़े जानवरों के जबड़ों में लगाए जाते थे और मिश्रित उपकरण के रूप में उपयोग किए जाते थे, जिन्हें तीर या भाला बनाने के लिए अन्य वस्तुओं में बाँधा या लगाया जा सकता था। इन उपकरणों को उनके आकार के आधार पर दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. ज्यामितीय
2. गैर-ज्यामितीय

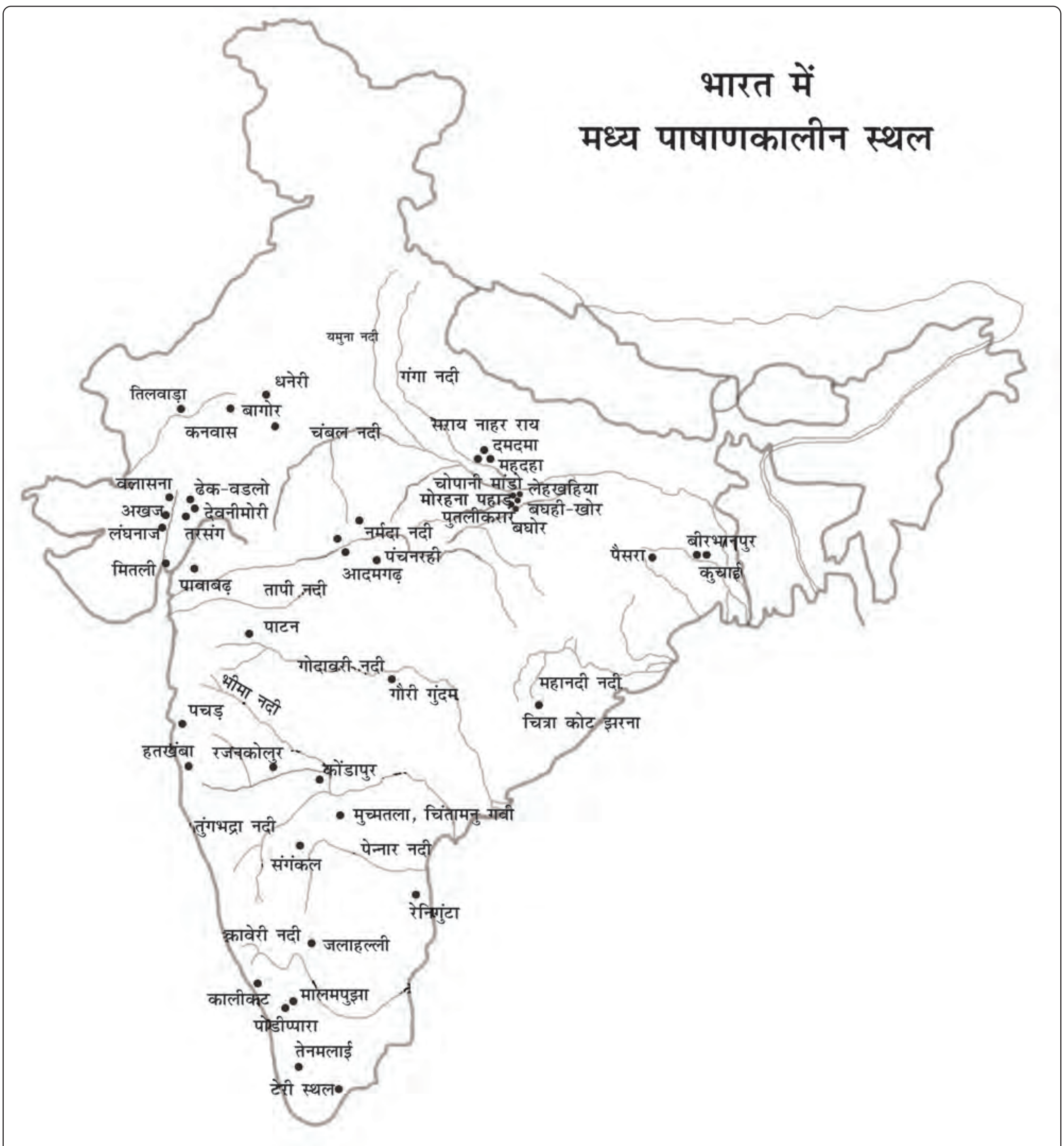

यह माना जाता है कि ज्यामितीय उपकरण (Geometric Tools) इस काल में उपकरण बनाने के एक उन्नत चरण को दर्शाते हैं।

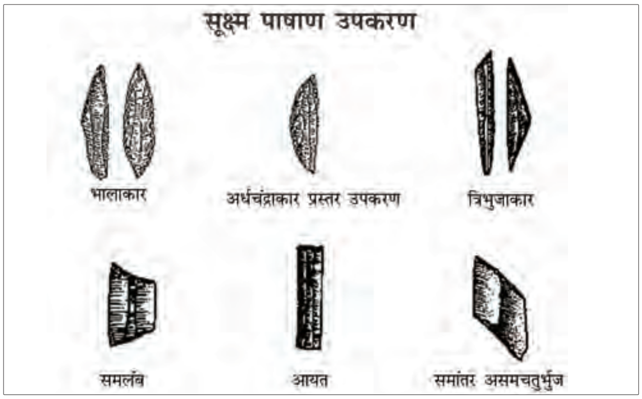

मुख्य उपकरण (Main Tools)

1. ट्रैपेज/समलंब
2. चंद्राकार या अर्धचंद्राकार (Lunate or Crescent)
3. संशोधित फलक (Retouched Blade)
4. तिरछा कुंद फलक या पेन चाकू (Obliquely Blunted blade or Pen Knife)
5. परतदार- नुकीला उपकरण (Flake-Points)
6. त्रिभुज - स्केलीन (Triangle – Scalene)
7. सूक्ष्म खोदनी (Microburin)

मध्य पाषाण काल में कला (Art in Mesolithic Age)

भीमबेटका की गुफाओं में इस चरण के कई शैलचित्र हैं। चित्रकला का विषय अलग-अलग पक्षी, जानवर और मानव थे तथा अधिकाँश जानवर और पक्षी ऐसे हैं, जिनका शिकार किया जाता था। अनाज पर आश्रित पक्षियों को चित्रों के शुरुआती समूह में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि इस काल के लोग अधिकतर शिकारी थे और भोजन इकट्ठा करते थे।

मध्य पाषाण काल में समाज (Society in Mesolithic Age)

मध्य पाषाणिक समाज का निरूपण

मध्य पाषाण काल के लोग शिकार, मत्स्यन एवं भोजन एकत्रित कर (शहद एवं वन्य बीज संग्रह) निर्वाह करते थे तथा बाद के चरण में उन्होंने पशुओं को पालतू बनाना शुरू कर दिया। पुरापाषाण काल में शिकार के प्रारूप में बड़े जानवरों से छोटे जानवरों की ओर बदलाव आया, जिन पर धनुष और तीर की सहायता से वार किया जा सकता था। शिकार के लिए दल बनाए जाते थे, सामान्यत: 25 से अधिक लोग नहीं होते थे। आपसी सहायता के लिए विभिन्न दलों के बीच एक प्रकार का समझौता हो सकता था तथा विभिन्न दलों के बीच शत्रुता भी हो सकती थी। इसने अंतत: दल को एक 'बहिर्युग्मन समूह' (Xogamous Group) में बदल दिया, जिसे नवपाषाण काल में कबीला कहा जाता था। इससे यह पता चलता है कि आंशिक निष्क्रिय जीवन (Sedentary Life), साथ ही कलह एवं युद्ध (Feud and Warfare) उनकी संस्कृति का हिस्सा बन गए होंगे।

मध्य पाषाण काल का महत्त्व (Importance of Mesolithic Age)

मध्य पाषाण काल के लोगों ने जलवायु में अचानक हुए परिवर्तनों के प्रति स्वयं को अच्छी तरह से समायोजित किया (Adjusted) और नई चुनौतियों से निपटने में काफी प्रगति की। उन्होंने शिकार की चुनौतियों से निपटने के लिए नए उपकरण (सूक्ष्म पाषाण उपकरण) विकसित किए। वे पशुओं को पालतू बनाने के क्षेत्र में अग्रणी थे। वे कृषि उद्यम (Cultivation) आरंभ करने वाले पहले लोग भी थे। ये सभी गतिविधियाँ उन्हें निष्क्रिय जीवन की ओर ले गईं तथा समाज के आगे के विकास के लिए आधार बनीं, जिसे हम नवपाषाण काल में देखते हैं।

मध्य पाषाण काल की सीमाएँ (Limitations of Mesolithic Age)

मध्य पाषाणकालीन लोग केवल अपने निर्वाह के लिए ही उत्पादन करते थे, किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं। समाज अधिक विकसित नहीं था तथा दल एवं समूहों के रूप में अस्तित्व में था।

1.4 नवपाषाण काल (9000 - 1000 ईसा पूर्व) [Neolithic Age (9000 – 1000 BC)]

नवपाषाण काल का अर्थ है, नवीन पाषाण काल। यह इतिहास का वह कालखंड है, जिसमें मनुष्य ने अपने अस्तित्व के लिए प्रकृति पर निर्भर रहने से लेकर उसका दोहन करने वाला बनने तक अंतत: प्रकृति के साथ अपने संबंध को बदल लिया। नवपाषाण काल के लोगों ने अनाज और अन्य फसलों का उत्पादन शुरू किया, मवेशियों को पालतू बनाया और अधिक निष्क्रिय जीवन-शैली अपनाई। नवपाषाण काल के लोगों ने मृदभांड और बुनाई का

आविष्कार किया तथा स्थायी गृह निर्माण पद्धतियाँ विकसित कीं। तकनीकी विकास के आधार पर नवपाषाण स्थलों की विशेषता निम्नलिखित की उपस्थिति से होती है:

(क) सेल्ट्स (एक प्रकार की कुल्हाड़ियाँ)

(ख) गर्तावास (Pit dwelling)

(ग) मृदभांड (Pottery)

प्रमुख स्थल (Major Sites)

नवपाषाणकालीन स्थलों को निवासियों द्वारा उपयोग की जाने वाली कुल्हाड़ियों के प्रकार के आधार पर 3 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार हैं:

1. **उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र:** इस क्षेत्र में घुमावदार काटने वाले किनारों के साथ आयताकार कुल्हाड़ियों का उपयोग किया जाता था।
2. **उत्तर-पूर्वी क्षेत्र:** इस क्षेत्र में मानव आयताकार हत्थे के साथ पॉलिश किये गए पत्थर की कुल्हाड़ियों और कभी-कभी कंधे वाले कुदाल का उपयोग करता था।
3. **दक्षिणी क्षेत्र:** इस क्षेत्र में अंडाकार किनारों और नुकीले हत्थे वाली कुल्हाड़ियों के उपयोग के साक्ष्य मिले हैं।

प्रत्येक क्षेत्र के स्थलों का विवरण इस प्रकार है:

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (North-Western Zone)

- बुर्जहोम श्रीनगर के निकट झेलम घाटी में स्थित एक स्थल है। इस क्षेत्र के लोग झील के किनारे गर्तों में रहते थे और संभवतः उनकी आखेटन एवं मत्स्यन (Hunting and Fishing) आधारित अर्थव्यवस्था थी। वे पत्थरों के पॉलिश किए हुए औज़ारों का प्रयोग करते थे। रुचिकर बात यह है कि इस क्षेत्र में हड्डियों से बने कई उपकरण और हथियार भी उपयोग किए जाते थे। ये लोग मोटे भूरी मिट्टी के मृदभांडों का उपयोग करते थे। उन्होंने पालतू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ उनकी कब्रों में दफ़नाने की प्रथा अपनायी थी।
- गुफकराल भी श्रीनगर के निकट झेलम घाटी में एक स्थल है। यहाँ के लोग कृषि और पशुपालन दोनों करते थे।
- मार्तण्ड झेलम घाटी में स्थित एक और स्थल है।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (North-Eastern Zone)

- दाओजाली हैडलिंग (Daojali Hadling) असम के उत्तरी कछार पहाड़ियों में स्थित स्थल है।
- चिरांद बिहार में छपरा के पास चार नदियों- गंगा, सोन, गंडक और घाघरा के संगम पर स्थित एक स्थल है। चिरांद अन्य स्थलों की तरह पर्वतीय नहीं है, यह एक जलोढ़ का मैदान है। चिरांद की एक विशेषता पक्षियों, बैलों और साँपों की टेराकोटा मूर्तियों (Terracotta figurines) की उपस्थिति है। यह स्थल पत्थर के औज़ारों की कमी से पहचाना जाता है।
- कोल्डिहवा महागरा (बेलन नदी) इलाहाबाद के पास एक स्थल है और चावल के सबसे पुराने अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

दक्षिणी क्षेत्र (Southern Zone)

- यहाँ के लोग ग्रेनाइट पहाड़ियों की चोटियों पर या नदी के किनारे के पठारों पर बस गए थे। पत्थर की सहज उपलब्धता के कारण दक्षिण भारत में नवपाषाणकालीन बस्तियों की संख्या सबसे अधिक है।
- पिकलीहल कर्नाटक में स्थित है, जिसमें नवपाषाणकालीन लोगों की उपस्थिति थी, जो पशु-पालक थे और मवेशियों, बकरियों और भेड़ों को पालते थे। उन्होंने स्थानांतरित कृषि या झूम कृषि (Slash-and-burn cultivation) के तरीकों का उपयोग किया। पिकलीहल में राख के टीले और आवास स्थल दोनों की उपस्थिति है।
- टेक्कलकोटा कर्नाटक के बेल्लारी जिले में स्थित एक स्थल है। यह स्थल एक ग्रेनाइट पहाड़ी के ऊपर है। कर्नाटक में अन्य स्थल मस्की, ब्रह्मगिरि, हल्लूर, कोडेकल, पिकलीहल, संगनकल्लू और टी. नरसीपुर हैं। पैय्यमपल्ली और उत्नूर क्रमशः तमिलनाडु और तेलंगाना के स्थल हैं।

प्रमुख उपकरण (Major Tools)

इन स्थलों से मिले उपकरण विभिन्न आकार-प्रकार के हैं। कुल्हाड़ी, बसूला, छेनी, हाथ की चक्की, गदाशीर्ष या रिंग स्टोन, कील, प्रस्तर का फावड़ा, कुदाल विभिन्न उपकरण हैं, जो डोलराइट या बलुआ पत्थर से बने होते थे। नवपाषाण काल के लोगों ने सूक्ष्म पाषाणिक फलक (Microlith Blades) का भी उपयोग किया था। हड्डी और सींग का उपयोग बर्छी, तीर की नोक, खुरचनी, सुई एवं नुकीला उपकरण बनाने के लिए भी किया जाता था।

गदा शीर्ष/वाले प्रस्तर का उपयोग भूमि में बीज बोने से पहले भूमि को जोतने के लिए किया जाता था। जैसा कि पिकलीहल स्थल से स्पष्ट है। नवपाषाण काल के लोग स्थानांतरित या झूम कृषि करते थे। अतः तब अनाज पीसने के लिए पत्थर निर्मित चक्की का उपयोग किया जाता था। उनके द्वारा उगाई जाने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण फसलें गेहूँ, जौ और मक्का थीं। वे गाय, भेड़ और बकरियों को भी पालते थे। नवपाषाण काल के लोग अपेक्षाकृत स्थायी निवास वाले पहले लोग थे। वे प्राकृतिक गड्ढों में रहते थे। वे गड्ढे के फर्श पर रहते थे और गड्ढे के मुहाने को खंभों पर टिके हुए छप्पर से ढक देते थे। इन लोगों ने मृदभांड निर्माण के क्षेत्र में भी काफ़ी प्रगति की थी। मृदभांड के मामले में, यहाँ हाथ से बनी बिना पकाई गई किस्म से लेकर पहिए से बनी और पकाई गई किस्म तक का क्रमिक विकास दिखाई देता है।

बर्तनों का उपयोग अनाज रखने, खाना पकाने, खाने-पीने के लिए किया जाता था।

नवपाषाण काल का महत्त्व (Importance of Neolithic Age)

इन लोगों ने सभ्यताओं की समृद्धि की नींव रखी। इन्होंने खेती, बुनाई, बर्तन बनाने, गृह निर्माण, लिखने और जानवरों को पालतू बनाने की तकनीक विकसित की। इन तकनीकों का विकास जीवन-निर्वाह की शैली में अद्भुत बदलाव लाया। नवपाषाणकालीन लोग अब केवल आखेट, मत्स्यन एवं संग्रहण पर निर्भर नहीं रहे थे, वे भोजन उपलब्ध कराने के लिए खेती और पशुपालन भी करते थे।

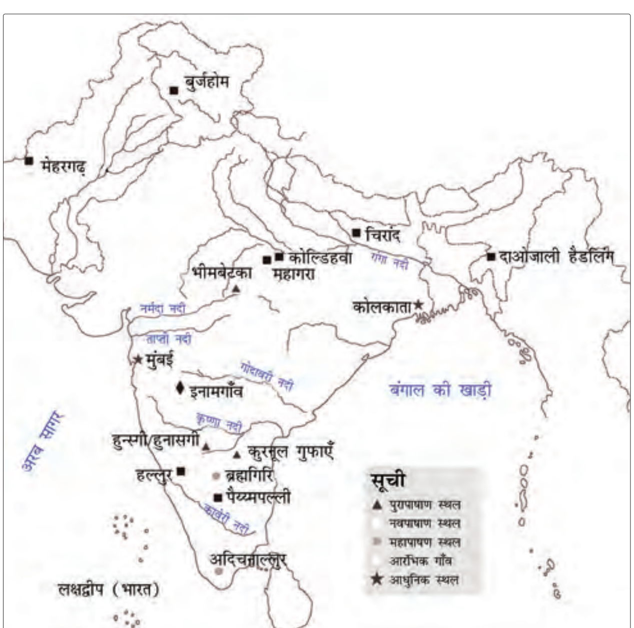

पुरापाषाण स्थल, नवपाषाण स्थल, महापाषण स्थल, आरंभिक गाँव, आधुनिक स्थल

नवपाषाण काल की सीमाएँ (Limitations of the Neolithic Age)

चूँकि इन लोगों के अधिकांश उपकरण और हथियार पत्थरों से बने थे, इसलिए इन्हें पहाड़ी क्षेत्रों से दूर बस्तियाँ नहीं मिल पाती थीं। वे अपने निर्वाह के लिए आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने में भी सक्षम नहीं थे।

1.5 ताम्रपाषाण काल (2800 ईसा पूर्व – 700 ईसा पूर्व) [Chalcolithic Age (2800 BC – 700 BC)]

ताम्रपाषाण काल का अर्थ है, प्रस्तर-ताम्र चरण (Stone-copper phase)। तांबा मानव द्वारा उपयोग की जाने वाली पहली धातु थी। ताम्रपाषाणकालीन लोग अधिकतर पत्थर और तांबे की वस्तुओं का उपयोग करते थे, लेकिन कभी-कभी वे कांस्य और लोहे का भी उपयोग करते थे। वे पहाड़ी क्षेत्रों और नदियों के किनारे रहते थे और मुख्य रूप से एक ग्रामीण समुदाय थे। जलोढ़ मैदानों और घने जंगलों वाले क्षेत्रों को छोड़कर, ताम्रपाषाण संस्कृति के स्थल लगभग पूरे भारत में खोजे गए हैं।

प्रमुख स्थल (Major Sites)

जिन क्षेत्रों के आस-पास इस संस्कृति के स्थल पाए जाते हैं, वे इस प्रकार हैं:

- **दक्षिण-पूर्वी राजस्थान:** दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में दो स्थल अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं: एक अहार और दूसरा गिलुंड। अहार और गिलुंड दोनों राजस्थान में बनास नदी घाटी के शुष्क क्षेत्र में स्थित हैं। अहार के लोग प्रारंभ से ही गलाने और धातुकर्म का कार्य करते रहे हैं। दरअसल, अहार का पुराना नाम तांबवती या तांबा रखने वाला स्थान है। सिंध में अमरी और कोटदिजी का भी उल्लेख किया जा सकता है; राजस्थान में कालीबंगा और गणेश्वर। गणेश्वर में 'गेरूआ रंग के मृदभांड' (OCP: Ochre-Coloured Pottery) मिलते हैं, जो लाल रंग के लेप वाले (Red-slipped ware) बर्तन होते हैं, जिन्हें अक्सर काले रंग से रंगा जाता है तथा बड़े पैमाने पर फूलदान (टेंम) के रूप में दर्शाया जाता है।
- **पश्चिमी मध्य प्रदेश:** इस क्षेत्र में मालवा, कायथा और एरण जैसे स्थलों की खुदाई (Excavated) हुई है। मालवा के बर्तन सभी ताम्रपाषाणिक मृदभांडों (Chalcolithic Ceramics) में सबसे समृद्ध माने जाते हैं।
- **पश्चिमी महाराष्ट्र:** इस क्षेत्र में सबसे व्यापक-स्तरीय उत्खनन (Extensive Excavations) हुआ था और इस क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण ताम्रपाषाण स्थल मौजूद हैं। अहमदनगर जिले में

जोर्वे, नेवासा और दैमाबाद; पुणे जिले में चंदोली, सोनगाँव और इनामगाँव तथा नर्मदा नदी पर नवादाटोली की खुदाई की गई थी।

- **पूर्वी भारत:** इलाहाबाद जिले के विंध्य क्षेत्र में कई ताम्रपाषाण स्थल पाए जा सकते हैं। चिरांद गंगा नदी के किनारे पर, पश्चिम बंगाल में पांडु राजार ढिबी बर्दवान जिले में और महिषदल के पूर्वी मेदिनीपुर जिले में स्थित है। कुछ अन्य स्थल बिहार के सेनुआर, सोनपुर और ताराडीह तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के खैराडीह और नरहन में भी पाये गए हैं।

प्रमुख उपकरण (Major Tools)

ताम्रपाषाण काल के लोग पत्थर से बने छोटे-छोटे औज़ारों और हथियारों का उपयोग करते थे। जोरवे और चंदोली में चपटी, आयताकार तांबे की कुल्हाड़ियाँ पाई गई हैं और तांबे की छेनी महाराष्ट्र के चंदोली में पाई गई है। गणेश्वर से तीर की नोक, भाले की नोक, मछली के कांटे, बछेड़े, चूड़ियाँ और छेनी के उपस्थिति का पता चला है, जो तांबे से बने थे। इस क्षेत्र में पाए जाने वाले कई सूक्ष्म उपकरण ताम्रपाषाण संस्कृति से संबंधित हैं। ताम्रपाषाण काल के लोग विभिन्न प्रकार के मृदभांडों का उपयोग करते थे, जिनमें से एक को काला एवं लाल मृदभांड कहा जाता है और यह 2000 ईसा पूर्व के बाद व्यापक स्तर पर प्रचलित था।

पशुओं का घरेलूकरण (Domestication of Animals)

वे गाय, भेड़, बकरी, सूअर और भैंस पालते थे एवं हिरण का शिकार करते थे। वे ऊँटों से भी परिचित थे, लेकिन घोड़े के विषय में साक्ष्यों का अभाव है।

कृषि एवं भोजन (Agriculture and Food)

वे कृषि करते थे और गेंहूँ, चावल और बाजरे का उत्पादन करते थे। उन्होंने मसूर, काला चना, हरा चना और घास मटर जैसी दालें भी पैदा कीं। दक्कन की काली कपास मिट्टी पर कपास का उत्पादन होता था, जबकि रागी, बाजरा और कई अन्य मोटे अनाजों का उत्पादन निचले दक्कन में किया जाता था। चावल का उत्पादन बिहार और पश्चिम बंगाल में किया जाता था। नवादाटोली के लोग बेर और अलसी का उत्पादन करते थे। बिहार और पश्चिम बंगाल में मछली के कांटे पाये गए हैं, जो मछली और चावल के प्रति उनके प्रेम को दर्शाते हैं। वे गाय और सूअर का मांस भी खाते थे।

ताम्रपाषाण काल में कला (Art in Chalcolithic Age)

इस काल के लोग 'विशेषज्ञ ताम्रकार और कुशल प्रस्तर-शिल्पी' थे। इस काल से औज़ार, हथियार और तांबे की चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। उन्होंने कारेलियन, स्टीटाइट और क्वार्ट्ज क्रिस्टल जैसे अर्ध-कीमती पत्थरों के मनकों का निर्माण किया था। चूँकि मालवा में तकली की चक्की की खोज की गई थी, इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मालवा के लोग कताई और बुनाई की कला जानते थे। सेमल/रेशम (Semal/Silk) के सूती रेशम से बने कपास, सन और रेशम के धागों की उपस्थिति से पता चलता है कि लोग कपड़े के निर्माण से अच्छी तरह परिचित थे। महाराष्ट्र के इनामगाँव में कुम्हार, लोहार, हाथी दाँत बनाने वाले, चूना बनाने वाले और टेराकोटा कारीगरों की उपस्थिति थी।

ताम्रपाषाण काल में समाज (Society in Chalcolithic Age)

ताम्रपाषाणिक समाज मानव इतिहास में सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification) दर्शाने वाला पहला समाज था। 'बसावट पद्धति और दफ़नाने की प्रथाएँ' (Settlement pattern and burial practices) सामाजिक असमानताओं की उपस्थिति का संकेत करती हैं। यह जोर्वे बस्तियों में देखा जाता है, जहाँ कुछ बस्तियाँ बीस हेक्टेयर की हैं और अन्य केवल पाँच हेक्टेयर या उससे कम की हैं। इसका तात्पर्य दो-स्तरीय बस्तियों (Two-tier habitations) से है। इन लोगों ने भी उपासना करना आरंभ कर दिया था और इसकी पुष्टि महिलाओं की टेराकोटा मूर्तियों की खोज से होती है, जिन्हें मातृ देवी के रूप में पूजनीय माना जाता था। मालवा और राजस्थान में बैल की शैलीबद्ध टेराकोटा आकृतियों की खोज से पता चलता है कि बैल एक धार्मिक पंथ का प्रतीक था।

मध्य और पश्चिमी भारत में ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ 1200 ईसा पूर्व तक लुप्त हो गई थीं। केवल जोर्वे संस्कृति ही 700 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में रही थी। पश्चिमी भारत और पश्चिमी मध्य प्रदेश में इस संस्कृति के पतन का प्रमुख कारण वर्षा में कमी थी। अन्य क्षेत्रों में ताम्रपाषाण काल का स्थान लौह काल ने ले लिया था।

ताम्रपाषाण काल का महत्त्व (Importance of Chalcolithic Age)

इस काल के लोग 'तांबा गलाने और धातुकर्म' (Copper smelting and metallurgy) के बारे में जानने वाले पहले लोग थे। इस ज्ञान का उपयोग बाद में कांस्य बनाने और लोहे जैसी अन्य धातुओं को शुद्ध करने के लिए किया गया। वे चित्रित मृदभांडों (Painted Pottery) का उपयोग करने वाले पहले लोग थे। उनमें से लगभग सभी पहिए पर बने काले और लाल बर्तनों का उपयोग करते थे। वे प्रायद्वीपीय भारत में पहले बड़े गाँव बनाने वाले पहले लोग थे और नवपाषाण लोगों की तुलना में कहीं अधिक अनाज की खेती करते थे।

ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों की सीमाएँ (Limitations of Chalcolithic Cultures)

ताम्रपाषाण काल के लोग अपने द्वारा पालतू जानवरों का पूर्ण उपयोग करने में असमर्थ थे, क्योंकि वे भोजन के लिए उनकी बलि

देते थे तथा दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों के लिए उनका उपयोग नहीं करते थे। वे बड़े और सघन पैमाने पर खेती नहीं करते थे, इसके बजाय वे स्थानांतरण या झूम खेती करते थे। ताम्रपाषाण काल के लोगों में शारीरिक कमज़ोरी व्याप्त थी, जो पश्चिमी महाराष्ट्र में बच्चों को बड़े पैमाने पर दफ़नाने से स्पष्ट होती है। खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक थी, जिसका कारण खराब पोषण, चिकित्सा ज्ञान की कमी या महामारी का प्रकोप हो सकता है।

ताम्रपाषाणिक संस्कृति स्वाभाविक रूप से ग्रामीण पृष्ठभूमि की थी। वे पक्की ईंटों से परिचित नहीं थे, जिनका उपयोग बहुत कम किया जाता था, जैसा कि गिलुंड में लगभग 1500 ईसा पूर्व में हुआ था। वे निर्माण के लिए अधिकतर मिट्टी की ईंटों का उपयोग करते थे और कभी-कभी, पत्थरों का भी उपयोग किया जाता था। वे टिन को तांबे के साथ मिलाकर कांस्य बनाने की कला से अनभिज्ञ थे।

कुछ महत्त्वपूर्ण खोजें (Some Important Discoveries)

- **महादहा:** यहाँ से हड्डी के आभूषणों की खोज हुई थी।
- **दमदमा:** यहाँ से एक ही कब्र में मानव कंकाल मिले थे।
- **मेहरगढ़:** भारतीय उप-महाद्वीप में कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- **नवादाटोली:** इससे गोल और आयताकार दोनों तरह की आवासीय संरचनाओं के उत्कृष्ट साक्ष्य मिले हैं।
- **संगनकल्लू:** 'राख का टीला' मैसूर के निकट वेल्लारी जिले में स्थित नवपाषाणकालीन स्थल संगनकल्लू से मिला है।
- **लेखहिया (विंध्य क्षेत्र):** यहाँ से सर्वाधिक संख्या में मानव कंकाल मिले हैं।
- प्रागैतिहासिक चित्रकला का सबसे अच्छा उदाहरण भीमबेटका के शैलाश्रय और गुफाएँ हैं।
- राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, जिसका नाम बदलकर इंदिरा गाँधी मानव संग्रहालय कर दिया गया, भोपाल में स्थित है।

■■■■

भारतीय प्राक्-इतिहास: महत्त्वपूर्ण तथ्य (Indian Pre-History: Important Facts)

	प्रारंभिक (निम्न)	मध्य	उत्तरवर्ती (उच्च)	मध्य पाषाण	नवपाषाण	ताम्रपाषाण
तकनीकी		शल्क उपकरण	चकमक पत्थर	सूक्ष्म पाषाणिक उपकरण	पॉलिशदार उपकरण	फलक तथा शल्क उपकरण
प्रयुक्त प्रस्तर	क्वार्टजाइट	क्वार्टजाइट	चर्ट, जैस्पर	अर्ध-कीमती पत्थर	डाइक, बेसाल्ट, डोलोमाइट	चौलेडोनी और चर्ट जैसी सिलिकायुक्त सामग्री तांबे और कांसे के औज़ारों का उपयोग भी सीमित पैमाने पर हुआ।
व्यवसाय	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन। होमो सेपियंस का आगमन।	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन। बाद के चरण में वे जानवरों को पालतू बनाना आरंभ करते हैं।	आखेट, भोजन एकत्रण और मत्स्यन का अभ्यास किया गया, नियमित कृषि आरंभ हुई। छोटे-छोटे गाँवों में बसे, खाद्य उत्पादन युग। मेहरगढ़-गेहूँ और कपास। मिर्जापुर-चावल की खेती।	निर्वाह कृषि, पशुपालन, कपास की खेती मेहरगढ़ के साथ-साथ सिंधु घाटी सभ्यता की मुख्य विशेषता थी। चावल की खेती का सबसे पहला साक्ष्य बेलन घाटी से मिला है। प्रस्तर आधारित मध्य पुरापाषाणिक उद्योग राजस्थान के दक्षिणी थार रेगिस्तान में स्थित था और इसे लूनी उद्योग कहा जाता था। पुरापाषाण और मध्यपाषाण युग की गुफा चित्रों में सबसे आम पशु हिरण था। राजस्थान में गिलुंड के लोग ईंटों के प्रति जागरूक नहीं थे। केला, नारियल, सुपारी आदि लगभग 2000 ईसा पूर्व दक्षिण-पूर्व एशिया से आए थे।
स्थल	सोन या सोहन घाटी, पंजाब, बेलन घाटी, मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद के पास)। डीडवाना, राजस्थान भीमबेटका, मध्य प्रदेश	भूगोल सामान्यत: निम्न पुरापाषाणकालीन स्थलों से मिलता है।	गुजरात टीलों का उच्च स्तर। आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य मध्य प्रदेश, दक्षिण उत्तर प्रदेश, भीमबेटका गुफाओं का उपयोग आश्रय स्थल के रूप में किया जाता था।	आदमगढ़, मध्य प्रदेश और बागोर, राजस्थान - जानवरों को पालतू बनाने का सबसे प्रारंभिक साक्ष्य। नमक झील, सांभर के निक्षेप पौधों की खेती का संकेत देते हैं।	**उत्तर** कश्मीरी-गरतावास, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ, पत्थर और हड्डी के औज़ारों की विविधता तथा सूक्ष्म पाषाणिक उपकरणों की अनुपस्थिति। बुर्जहोम, गुफकराल, बिहार-चिरांद **दक्षिण** गोदावरी के दक्षिण में **पूर्व** असम, गारो पहाड़ियाँ	ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के केंद्र राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के अर्धशुष्क क्षेत्रों में विकसित हुए। उनमें से कुछ अहार, गिलुंड, नागदा, नवादाटोली, एरण, प्रभास, रंगपुर, प्रकाश, दैमाबाद और इनामगाँव थे।
शवाधान/कब्र					बुर्जहोम- पालतू कुत्तों को उनके पालकों/मालिकों के साथ दफ़नाया गया।	पश्चिमी महाराष्ट्र में बड़े स्तर पर बच्चों की कब्रें।
मृदभांड	कोई मृदभांड नहीं मिला।				मिट्टी के बर्तनों का प्रथम संदर्भ। बुर्जहोम-अपरिष्कृत भूरे मृदभांड। इस युग में हाथ से बने मिट्टी के बर्तन मिले हैं। बाद के काल में- पैर से चलने वाले पहिए का भी उपयोग हुआ है। इसमें काले-जले हुए बर्तन, ग्रेवेयर और मैट-प्रेस्ड बर्तन शामिल हैं।	मिट्टी के बर्तन लाल से लेकर गहरे भूरे और काले, चित्रमय लाल और काले एवं पॉलिशदार लाल रंग के थे।
चित्रकारी	मध्य प्रदेश में भीमबेटका, उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी और नर्मदा घाटी में तीनों चरणों से संबंधित प्रागैतिहासिक कला है।					